कथा सरिता

यकीन करिए...

एक बार एक आदमी रेगिस्तान में कहीं भटक गया। उसके पास खाने-पीने की जो थोड़ी बहुत चीज़ें थीं वो जल्द ही खत्म हो गयी और पिछले दो दिनों से वो पानी की एक-एक बूंद के लिए तरस रहा था। वह मन ही मन जान चुका था कि अगले कुछ घंटों में अगर उसे कहीं से पानी नहीं मिला तो उसकी मौत पक्की है। पर कहीं न कहीं उसे ईश्वर पर यकीन था कि कुछ चमत्कार होगा और उसे पानी मिल जाएगा। तभी उसे एक झोपड़ी दिखाई दी! उसे अपनी आँखों पर यकीन नहीं हुआ। पहले भी वह मृगतृष्णा और भ्रम के कारण धोखा खा चुका था, पर बेचारे के पास यकीन करने के अलावा कोई चारा भी तो न था। आखिर ये उसकी आखिरी उम्मीद जो थी।

वह अपनी बची-खुची ताकत से झोपड़ी की तरफ रेंगने लगा, जैसे-जैसे करीब पहुँचता, उसकी उम्मीद बढ़ती जाती और इस बार भाग्य भी उसके साथ था, सचमुच वहाँ एक झोपड़ी थी। वहाँ एक हैण्ड पम्प लगा था, आदमी एक नयी ऊर्जा से भर गया, पानी की एक-एक बूंद के लिए तरसता वह तेज़ी से हैण्ड पम्प चलाने लगा। लेकिन हैण्ड पम्प तो कब का सूख चुका था। आदमी निराश हो गया। उसे लगा कि अब उसे मरने से कोई नहीं बचा सकता, वह निढ़ाल होकर गिर पड़ा। तभी उसे झोपड़ी की छत से बंधी पानी से भरी एक बोतल दिखाई दी। वह किसी तरह उसकी तरफ लपका। वह उसे खोल कर पीने ही वाला था कि तभी उसे बोतल से चिपका एक कागज़ दिखा। उस पर लिखा था – ''इस पानी का प्रयोग हैण्ड पम्प चलाने के लिए करें और वापस बोतल भर कर रखना नहीं भूलें।'' ये एक अजीब सी स्थिति थी, आदमी को समझ में नहीं आ रहा था कि वो पानी पिए या उसे हैण्ड पम्प में डालकर उसे चालू करे!

उसके मन में तमाम सवाल उठने लगे... अगर पानी डालने पर भी पम्प नहीं चला...अगर यहाँ लिखी बात झूठी हुई और क्या पता ज़मीन के नीचे का पानी भी सूख चुका हो...लेकिन क्या पता पम्प चल ही पड़े...क्या पता यहाँ लिखी बात सच हो...वह समझ नहीं पा रहा था कि क्या करे!

फिर कुछ सोचने के बाद बोतल खोली और कांपते हाथों से पानी पम्प में डालने लगा। पानी डालकर उसने भगवान् से प्रार्थना की और पम्प चलाने लगा। एक-दो-तीन... और हैण्ड पम्प से ठंडा-ठंडा पानी निकलने लगा। वो पानी किसी अमृत से कम नहीं था। आदमी ने जी भर के पानी पिया, उसकी जान में जान आ गयी, दिमाग काम करने लगा। उसने बोतल में फिर से पानी भर दिया और उसे छत से बांध दिया। जब वो ऐसा कर रहा था तभी उसे अपने सामने एक और शीशे की बोतल दिखाई दी। बोतल को खोला तो उसमें एक पेंसिल और एक नक्शा पड़ा हुआ था, जिसमें रेगिस्तान से निकलने का रास्ता था।

आदमी ने रास्ता याद कर लिया और नक्शे वाली बोतल को वापस वहीं रख दिया। इसके बाद वो अपनी बोतलों में पानी भर कर वहाँ से जाने लगा। कुछ आगे बढ़ कर उसने एक बार पीछे मुड़ कर देखा, फिर कुछ सोचकर वापस उस झोपड़ी में गया और पानी से भरी बोतल पर चिपके कागज़ को उतार कर उस पर कुछ लिखने लगा।

उसने लिखा – ''मेरा यकीन करिए... ये काम करता है!''

ये कहानी जीवन के बारे में है, ये हमें सिखाती है कि बुरी से बुरी स्थिति में भी अपनी उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिए और इस कहानी से ये भी शिक्षा मिलती है कि कुछ बहुत बड़ा पाने से पहले हमें अपनी ओर से भी कुछ देना होता है। जैसे उस आदमी ने नल चलाने के लिए मौजूद पूरा पानी उसमें डाल दिया।

अंधा घोड़ा

शहर के नज़दीक बने एक फार्म हाऊस में दो घोड़े रहते थे। दूर से देखने पर वो दोनों एक जैसे दिखते थे, पर पास जाने पर पता चलता था कि उनमें से एक घोड़ा अंधा है। लेकिन अंधे होने के बावजूद फार्म के मालिक ने उसे वहाँ से निकाला नहीं था, बल्कि उसे और भी अधिक सुरक्षा और आराम के साथ रखा था। अगर कोई थोड़ा और ध्यान देता तो उसे ये भी पता चलता कि मालिक ने दूसरे घोड़े के गले में घंटी बांध रखी थी, जिसकी आवाज़ सुनकर अंधा घोड़ा उसके पास पहुंच जाता और उसके पीछे-पीछे बाड़े में घूमता। घंटी वाला घोड़ा भी अपने अंधे मित्र की परेशानी समझता। वह बीच-बीच में पीछे मुड़कर देखता और इस बात को सुनिश्चित करता कि कहीं वो रास्ते से भटक ना जाए। वह ये भी सुनिश्चित करता कि उसका मित्र सुरक्षित वापस अपने स्थान पर पहुंच जाए और उसके बाद ही वो अपनी जगह की ओर बढ़ता।

दोस्तों..., बाड़े के मालिक की तरह ही भगवान हमें बस इसलिए नहीं छोड़ देते कि हमारे अंदर कोई दोष या कमियाँ हैं। वो हमारा ख्याल रखते हैं और हमें जब भी ज़रूरत होती है तो किसी ना किसी को हमारी मदद के लिए भेज देते हैं। कभी कभी हम वो अंधे घोड़े होते हैं जो भगवान द्वारा बांधी हुई घंटी की मदद से अपनी परेशानियों से पार पाते हैं, तो कभी हम अपने गले में बंधी घंटी द्वारा दूसरों को रास्ता दिखाने के काम आते हैं।

जब हवा चलती है तब...

बहुत समय पहले की बात है कि आइलैंड के उत्तरी छोर पर एक किसान रहता था। उसे अपने खेत में काम करने वालों की बड़ी ज़रूरत रहती थी, लेकिन ऐसी खतरनाक जगह, जहाँ आये दिन आंधी-तूफान आते रहते हों, कोई काम करने को तैयार नहीं होता था।

किसान ने एक दिन शहर के अखबार में इश्तहार दिया कि उसे खेत में काम करने वाले एक मज़दूर की ज़रूरत है। किसान से मिलने कई लोग आये, लेकिन जो भी उस जगह के बारे में सुनता वो काम करने से मना कर देता। अंततः एक सामान्य कद का पतला-दुबला, अधेड़ उम्र का व्यक्ति किसान के पास पहुंचा।

किसान ने उससे पूछा, ''क्या तुम इन परिस्थितियों में काम कर सकते हो?''

''हम्म, बस जब हवा चलती है तब मैं सोता हूँ।'' - व्यक्ति ने उत्तर दिया।

किसान को उसका उत्तर थोड़ा अजीब लगा, लेकिन चूंकि उसे कोई और काम करने वाला नहीं मिल रहा था इसलिए उसने व्यक्ति को काम पर रख लिया।

मज़दूर मेहनती निकला, वह सुबह से शाम तक खेतों में मेहनत करता। किसान भी उससे काफी संतुष्ट था। कुछ ही दिन बीते थे कि एक रात अचानक ही ज़ोर-ज़ोर से हवा बहने लगी। किसान अपने अनुभव से समझ गया कि अब तूफान आने वाला है। वह तेज़ी से उठा, हाथ में लालटेन ली और मज़दूर के झोपड़े की तरफ दौड़ा।

''जल्दी उठो, देखते नहीं तूफान आने वाला है। इससे पहले कि सबकुछ तबाह हो जाए कटी फसलों को बांध कर ढ़क दो और बाड़े के गेट को भी रस्सियों से कस दो।'' - किसान चीखा। मज़दूर बड़े आराम से पलटा और बोला- ''नहीं जनाब, मैंने आपसे पहले ही कहा था कि जब हवा चलती है तो मैं सोता हूँ!''

यह सुन किसान का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच गया, जी में आया कि उस मज़दूर को गोली मार दे, पर अभी वो आने वाले तूफान से चीज़ों को बचाने के लिए भागा।

किसान खेत में पहुँचा और उसकी आँखें आश्चर्य से खुली रह गयीं। फसल की गांठें अच्छे से बंधी हुई थी और तिरपाल से ढ़की भी थी। उसके गाय, बैल सुरक्षित बंधे हुए थे और मुर्गियां भी अपने डिब्बों में थी। बाड़े का दरवाज़ा भी मज़बूती से बंधा हुआ था। सारी चीज़ें बिल्कुल व्यवस्थित थी। तब किसान उसके ''तब मैं सोता हूँ'' को समझ चुका था और अब वो भी चैन से सो सकता था। हमारी ज़िंदगी में भी कुछ ऐसे तूफान आने तय हैं। ज़रूरत इस बात की है कि हम उस मज़दूर की तरह पहले से तैयारी कर के रखें ताकि मुसीबत आने पर हम भी चैन से सो सकें। जैसे हर महीने बचत करने वाला व्यक्ति पैसे की ज़रूरत पड़ने पर निश्चिंत रह सकता है।

हाथरस-आनन्दपुरी कॉलोनी(उ.प्र.)। हिन्दी पत्रकारिता दिवस पर कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. उर्मिला,मा.आबू, अपर जिलाधिकारी रेखा एस. चौहान, नगरपालिका अध्यक्ष आशीष शर्मा, नगरपालिका अधिशासी अधिकारी स्वदेश आर्य तथा ब्र.कु. शांता।

कोटा-कुन्हाड़ी(राज.)। बारह दिवसीय 'अलविदा तनाव एवं राजयोग अनुभूति शिविर' में दीप प्रज्वलित करते हुए तनाव मुक्ति विशेषज्ञा ब्र.कु. पूनम,इंदौर, रमेश आहूजा,अध्यक्ष,सिन्धु सोशल सर्कल, जी.डी. पटेल,अध्यक्ष,गायत्री शक्तिपीठ, मौलाना साहेब सिराजुद्दीन, जगदीश सिंह,गुरूद्वारा प्रमुख, हर्षित गौतम,अधीक्षक,करनी विकास समिति, ब्र.कु. उर्मिला तथा अन्य।

राँची-झारखण्ड। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सेंट्रल कोल फील्ड लि.राँची में 'होलिस्टिक हेल्थ एंड पॉज़ीटिव थिंकिंग' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए रश्मि दयाल,जी.एम. वेलफेयर,सी.सी.एल., ब्र.कु. निर्मला, ब्र.कु. डॉ. दिनेश शर्मा, ब्र.कु. अनीता शर्मा,दिल्ली तथा अन्य।

मोतिहारी-हेनरी बाज़ार(बिहार)। सेवाकेंद्र में आने पर ज्ञानचर्चा के पश्चात् वरिष्ठ सरकारी अधिवक्ता महेंद्र प्रताप यादव को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. विभा। साथ हैं ब्र.कु. रेखा तथा विनोद तिवारी।

पटियाला-पंजाब। आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् सरदार जस्सा सिंह,प्रेसीडेंट,सरबत दा भला को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कविता, ब्र.कु. पूजा, ब्र.कु. जगदीश तथा अन्य।

फरीदाबाद-हरियाणा। अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण दिवस पर पौधा रोपण करने के पश्चात् चित्र में ब्र.कु. अनुपम, ब्र.कु. निरूपम, विद्यार्थीगण तथा अन्य।